



[illegible]

सुप्रसन्नचित्तं विरहितं लयनयुद्धं मित्रादिनवविधाभि
 ६ अथथामैशेनभानभानैकखातव्यशा वागन्तः
 लङ्गनिथ गाहाकच्छिजग धृष्टयुनिगाच्छाडावादान
 ऊडाभ्रानमसचन्द्रमागमगजयुधनयु वसशा यव
 डा वाजगमचन्द्रनक्षाय वक्राकाश नदिनी ऊर्मभा
 दानयश्चाडा आदिरुवानीया दुर्गिगनसन्निनिज

द्यानरुक्ताजाचकमहूनः विस्वासवज्रममालः ॥ थावाउ
थदग्वकर्क उनउलथयादन सिधनसः धननयद
नः सैददममान सिद्धिवत् ॥ २ ॥ अयद ॥ ॥
ददनेष्टकसः धकार्क सिद्धवाउथलः सुवद्वि
सनः सिद्धयायादमवाउथन दानमजिन सिद्धि
काटिखः मयवकार्क विननयदनेः अमकशुको ल

वमरुन ह्मदधायवममाल ॥ ३ ॥ अयद ॥ ० ॥
धकार्कदरुना ह्मनचित्तनयंकलया विकलशास
नः अरुमयिजनवकायागगः धननलितामन आव
रुयागमटनः मयस कयानिसन अकस्यान विना
धवीलनयनना सुवद्विजननः रंगनगमनयाय
वूयनल गमनयागसा अर्थलारः कार्यसिद्धिवत्

॥ ४ ॥ अथ ॥ ० ॥ अथ कार्यविनयनया कार्यस
दसनः सक्तवस्तुवृद्धिरुत्तः संभावरुत्तन शुक्तिदि
नाथकार्यसदललाव वलवक्तुसक्तदा भववृद्धि
न अमा धक्तुधननयद्वन भाषक्तुदास योगियनानि अ
भासवायितीयावमक्तन म्भवनववरीक्तनयादानः अ
भाववनयाद्वनः रुयममालसिद्धियुत्तः ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥ ० ॥ अथ यद्वक्तु ॥ ६ ॥ अथ यद्विवादतः
वादाना अमाधक्तुधन अत्मासक्तवादाना धववृद्धिन
ः यद्वक्तुधन अभाववनन वक्तुधनमक्तनः ६ नय
दिक्तु अनूक्तमयाक्तमः अभासवानायासिधनः
भावकार्यविनयनयद्वनः ॥ ७ ॥ अथ ॥ ० ॥ अथ
यद्वक्तु ६ यथाक्तन यवनमाक्तना अथ यद्वक्तु

एक कसं च यथा जन वदन् मानना अथ गुरुन
सर्ना आकुरुनना न कविन रुसन काऊ मि वस
ना अधनना अमास वचनयाहन विकल्पमनन
याहिना काऊना रुना एगसवो वचनमद्यसन अ
इवे कवो न वचनयाहन कार्य सिद्धि रूयुवः स द
रुममाल ॥ १ ॥ अथ ॥ ० ॥ अथ काऊ विवर्थ

विनयनटा कीलुसुहिनल कइसन नाद्यायक
यर्नल नाविचक मठनननायाहन विलरुमनन
द्यारा नयं गिंय दिवसन थकाऊयाहन थमनल
श्रीसयाकिरूयुव ॥ ८ ॥ अथ ॥ ० ॥ अथ वलस
मिसवचनन विकल्प रुनना विकल्प रुयमठन थ
मस्यमनयहन सयममालः आत्माननायाहन स

सा न या द्विष्टका न दातु विम विरु मठन (अमक विवा
दयाचमनन लुकास रुतन कष्ट रुयमनन लुकास क
मन रुयु निन आसममालः ॥ थ नन लुकास रुतः ॥ थ
का ऊ खन रुयुव निन आसममाल द्वि सिव वि ॥ १॥
अ. अ. द. ॥ ० ॥ चिर्लु थिनयाचमाल्वत थिनम रुव
रु नानय कानयाद का ऊ विधि रुनना गव सकल

रुयु रुतुन विनाध अलाचनया रुनां न रु रुनस
नावू निन रुवो रु क म रुनः ॥ थ आ वाय रुममाल
॥ १० ॥ **अ. अ. य. ॥** ॥ द्याया थं अभाया आधयमः
रुनः अभाया वचननः कष्ट रुननाः आ वध माल
ला रुतन रुत लायु खनः अभा का ऊ रुको विनाध
वः यानि नाम रुको दव रुत नन च रुया आन दया

श्री
७

ॐ अकसमागतं दृष्ट्वा यत्कुरुयुतं संचरुममान् ॥
॥ ११ ॥ अथ यत् ॥ ० ॥ निष्टुष्टकसं वीरुनवीरुन
यदुन सिद्धिना मासिद्धिना आभावरुनं थिनाचा
रुसुननं रुथं याथं संचरुनियुतं मनावीरुन
ललाय रुष मुरुनन सिद्धियुतं ॥ १२ ॥ अथ यत्
॥ ० ॥ रुसुननं यत्कुरु ० रुनविनं यथाकाऊ

नीयाय रुषयानि रुयुतं रुनेत् रुकटक्षत्रमात्
कचिरु रुगियाचममाले कर्मन सिद्धियुतं कदा
चिरु विम्वरुलसा रुसुनासकाऊ सिद्धि ॥ १३ ॥
अथ यत् ॥ ० ॥ अथाकाऊ याचम रुनयुकाचया
यमान् अनुरु मया रुकिं व रुव रुक रुथं दे रुसु
थायमानया रुन सिद्धि रुयु संचरुनन ॥ १४ ॥

पुद्गल ॥ ० ॥ धकार्य जगुयावदा उरथं वज्र
मदय कलाचमसुन धन उरथं व कार्जुन व कष्ट
यादुत गा कालन दुखे सिद्धि दाना खरु सन ॥
सुंदरु ममाल ॥ १३ ॥ अथ ॥ ० ॥ धकार
ऊननाम धिष्ठन दवधवलन दुखे सिद्धि कुरुकाः
कलैर्यंरुसेनेना यनायका नयादुन व्यवनमा

काकार्यदाम लावावलनगदा काल दवटं ला कथ
जगनयादु संयतिशु ॥ १४ ॥ ० ॥ ववव ॥
ऊनचीन जया कार्जु सिद्धि वृत्त संना संरुसन व
कुर्या ज्ञानंद सावधायुख धवधनी न ज्ञायादुन
सुवयका न न दवसवल जय नयि वृत्त गुरु वृत्त
वास् वरुथ न सं वरुथ वरुथ सकल म विन नयका

ऊना महासयादयनायायकयूतनिधिजनः ॥
 वावदय ॥ १ ॥ अथ कार्कयायसप्तवावविष्णुसंवः
 जमटनः सक्तयनीसन आलाचयेनेनरणा अय
 कासयायः उगच्छिनादवसनः वागादावजमाः
 सक्तयनीसदाविष्णुसममद लनांयदासद्वंजमटन
 :मचिगजयदासखसिद्धिद्व ॥ २ ॥ वावदय ॥ ॥

[illegible]

अथ यन ॥ ३ ॥ वयव ॥ अथ कार्जुगत्थचिन्मयं वयं
थवचर्कचभरुवां न ॥ एकचिर्कुरुसन चिन्मय
हून सकलकार्जुवृत्तिवित् उचमो रुरुसन कार्जुसि
द्धिरुयु निश्चयन ॥ ३ ॥ वयव ॥ अथ कार्जुय
द्धिरिग्वं ॥ अकुरुनविनाधचिन्मययना ॥ अथ वयव
असया हून ॥ अथ यिनिमैरुवद्वं विष्वासवनिन ॥

कलमाकार्जुवृत्तिवित् ॥ ४ ॥ वयव ॥ ० ॥
अथ कार्जु नवययासन चिन्मययना ॥ अथ कुरुलसनां म
सिधय कदाचिर्कुरुसिधयना ॥ माकासननुनिमिद्धिरुव
नामवातलमदयक नामयाजयायमजित् वचनरुवाही
नकव ॥ अथ नानानानं सिद्धिरुव ॥ ५ ॥ वयव ॥ ० ॥
अथ याजन यवास्यायव चिन्मययना ॥ अथ वयव

नवयिमियाहून सिद्धिद्वय चिन्तयहून सन्भावह
कथायमाल ॥ ८ ॥ वचय ॥ ॥ थकार्जसिनः
कंखिहू गुंवडुथंद मसिधन जलयायममाल
हिं(ग)मवकार्जसाहून थकार्जमसिधन ॥ ९ ॥
वचय ॥ ॥ दहून। एहूकस हूनमनसगंदा हू
चर्कस यवा सवनयचना असकवदान हूनदह

यूख आनदयाहून सन्भावहून कमाचिन्तयः
यहून अर्थकार्जतासहवदान आनदटचर्कस
न सिद्धिद्वय ॥ १० ॥ वचय ॥ ० ॥ थकार्जसिः
धयकंडं जिव कृणवृंदव अमा कृणसहवयहून थ
व(ग)स सवउरुवसता नायकसाधनयहून थनः
न सिद्धिद्व संधरुममाल ॥ ११ ॥ वचय ॥ ० ॥

थकार्जयायस ॥ कुर्याद्विदा मसिधन कष्टनसाधन
यंत्रं भा कजचिन्मथमकलशा न सा कार्जनास मवर्ति
ग्वकार्जचिन्मथयहन थनिमिरुिन ऊननदयानिच
मसिधन ॥ १२ ॥ ववज्ज ॥ ॥ थकार्जखिदु गुं
वडु थद कष्टदललयहन ग थं गुनामस दददना
मन समूदयाययामजिच ॥ थं ग्वकार्जगुटिद्विनः

सिधनसा कष्टरूपयुख ॥ १३ ॥ वज्ज ॥ ॥ थ
कार्जमूधकाल उडु थं ख जावसदं दं ग्व दावडु थं ख
लखमदयकं म्वायमद कषयद्वियातग थनन दवस
वत्तन ना कालनसिद्धिदख ॥ १७ ॥ वज्ज ॥ ॥
दहनयष्टकस वययाहन थकार्जनानमसिधन
धूलचरुहसन मिसज्जवकासमनल थीयवर्तकस

न विष्णुनयहून सिद्धिनिष्ठयन ॥ ११ ॥ वयय
॥ ॥ थकार्कसिद्धिमदा सन्नायकसून सवद्धि
याहन साधनयहन थवहिननमासयनयं खवज
यू थकार्यस दवसवलनरुनसनी नागरुयमरु
न ॥ १० ॥ ॥ वययय ॥ दहनयदकसः
थकार्कस रुषनसिद्धियूख ॥ दवकासवलन स

किरुसन गाथचदकलावद्धिरुनं अथवृष्टसंभ्य
किरुयूख सकललणकुजयलयं कार्कसिद्धिरुयूख ॥
॥ १ ॥ वयदद ॥ ॥ थकार्क ॥ धरुन नानायनिन
दृष्टवविचूना विनाधयादधायू अभाव विष्वासव
नमटल अयासममालकं नाकालन सिद्धिव ॥ २
॥ वयदय ॥ ॥ दृष्टकस दनयवनामा द्याया

याहन दवनवतनरुचसनां थमयथमदल दध
सरावजसन लिलासन थनन वाजकयजादिः
यं नाना रुयं ममात् थव ॐ हृदवनात् ससलयं म
नसमंठारुलनायुख ॥ ३ ॥ ययद ॥ ० ॥ निष्ट
ककस खनमखधनलयहन थकार्कसखनसिद्धि
व ॐ हृदवनासकरुकिरसन थकार्कसख युग्य

वीनयाद यनायलायाहन थननखरुवेयु युधि
नांहागदाखन वरुयादलममात् हृयुधसमलयं
सकलताकार्कसिद्धिदख ॥ ७ ॥ ययद ॥ ० ॥
थकार्क सिद्धयुसयादाथंख कार्कथवथानसनाद
न थकार्कमसिध भवकार्कयाहन नमाकार्ककम
सिधु ॥ ९ ॥ ययद ॥ ॥ थकार्कमिमायमख ॥

एतद्गुणानां सद्भिद्युत ॥ ५ ॥ यदयम् ॥ ॥ नष्टम्
 कस्य चकार्जस्य विकल्पदा मसिधन मसिधयुता कान
 यममाला कागमदा गक्याकयस्यासख धननसिद्धिः
 वख ॥ १ ॥ यदयम् ॥ ॥ दृष्टम् कस्य दवसवल
 न सिद्धिवख दृक्कल्याणरुयुत नवसम्यक् वायुधन
 ॥ ८ ॥ यदयम् ॥ ॥ नष्टम् कस्य नविननयाः

कार्ज नवशला कस्य चिन्नयलना नवशला कया वच
 नद्वनमद्व धवद्विन सुसिद्धिवख कठिनवर्कस
 न ययचमनिनामसिधन धिर्यनसुयसिधयु संदहमम
 ल ॥ ९ ॥ यदयम् ॥ ॥ दृष्टम् कस्य चकार्जस्य वि क
 ल्या यलानेकसदयुत गथगुलसना लिथमवसिध
 यिवख ॥ १० ॥ यदयम् ॥ ॥ यकार्ज दयसिन्न

इति सनां ऊनयाहन दधारुलन ॐ हृदयवास्य
सादन ऊनयाहन सिद्धियुख ॥ १० ॥ ॐ मिथकावा
दिधादवा ॥ ॥ ॥ ददद ॥ ॥ हृष्टकसुथ
ऊसिद्धियुख मनावास्त्रिगुरुलनायुख गथकल्याण
रुऊननायुख ननानसिद्धियुख ॥ १ ॥ दयद ॥ ॥
हृष्टकसुथ वासवनायनना नननयख कार्जस

मामिहयुख अर्थलारुदयुख लोकासकलहमिह
युख रुहिल्लोहादायसंका वायमदव संकलनाका
ऊव सिद्धियुख ॥ २ ॥ ददय ॥ ॥ नष्टकसुको
थेऊ अनिथाकख लक्षवडथं ऊक दयानिन ऊऊ
लकार्जमयन निधननकषयाययुख दयानिन ऊ
दनयहन मसिधल ॥ ३ ॥ दयय ॥ ॥ थकार्ज

धकार्ज कवल कल्यान वृद्धि धायु जभास वचन नदशा
निच थन वृद्धि मसदन सिद्धि वख सन्दरुम माल ॥ ८ ॥
दयय ॥ ॥ धकार्ज वलन मसिध दान यूष्यया ह
न द्युयर्क नानाय विन रुचसना थीनया ह न सस्यया
हन जसस्यया यमद्व धनन खव रुय ॥ ९ ॥ दयय
॥ ॥ दृष्ट कस धकार्ज सिद्धि वख सिद्धन कवरु

लदयव कल्यान साजन रुय सन्काय रुसन ॥ १० ॥
दयय ॥ ॥ दृष्ट कस धकार्ज सिद्धि वख सिद्धन
कवरु लदय कल्याण रुय सन्काय रुसन ॥ ११ ॥
दयय ॥ ॥ दृष्ट कस धकार्ज हर्षि शायु ख अया
सममाल क उयलि गया द दय मिलन यिद्वय गक्य
निस्यन वीना धवि नय नाना धीर्यया ह न खऊ विरु

इसन सिद्धि यूख संभाखइसन ॥ १२ ॥ दयव ॥
हयह कस थकार्कसरु लयूख हयहन यीनिदयू
ख यकाहैन सिद्धि व संभाखइसन ॥ १३ ॥ दयव
॥ ॥ थकार्क लोक सववनन चनेयइयमठ निमै
वेइसन धनभावा केव हयहन मस्यवदाया हियव
कनन हयवयनयिदय संभाखइसन ॥ १४ ॥

दयव ॥ ॥ हयह कस थकार्कसरु लयूख
वयवमालिद चयइसन सतां हयममाल लोक स्यन
संकायाकना संयाकसना कार्क सिद्धि व ॥ १५ ॥
॥ दयव ॥ ॥ हयह कस थकार्कसरु लयूख
आयययकना जूमाववनमायमठद हयमसवना
या लोक सके थययआवना थमगायनययाहन

विलम्बमनन कार्कसिद्धिद्वय १८ ॥ ००० ॥ ॥
॥ नित्यकात्रादिभाउ ॥ नयात्रकापिन कवलिषामुस
युधसमाय ॥ ॥ ॥ अर्थचोत्रचिन्तावक्रामि
॥ मयत्रवाप्राप्तोत्र हक्रचोत्रमुक्रुष्टिया मिथूनव
स्यचोत्रमुक्रुष्टोत्रमुद्रका ॥ ॥ मयलम्बनरुपसा
वाप्राप्तोत्र हवलम्बनरुपसा प्रणी मिथूनलम्बनरुप

सा तस्यजामित्रात्र कर्कटलम्बनरुपसा सुद्रचोत्रस्यय
॥ १ ॥ सिद्धययाहनाचोत्र कंन्याचोत्रवाजंगना ॥
यनप्रिपुनथादासि उल्ललम्बनस्यनरुपसा ॥ सिद्ध
लम्बनरुपसा ये याहाननयुवस्यय कन्यलम्बनस्यनरुपसा वा
प्रकभात्रानयुवस्यय उल्ललम्बनरुपसा युध मिथु
मुधनस्यनयुवस्यय ॥ २ ॥ विष्टिष्टिकसाहक

यो न कुरुते मुखिकस्मृतः ॥ मीनत्रयवती श्री नृणां
शं दहा का नदः ॥ ॥ विह्वल ग्न इव सा दया किं जाः
यवस्य य धनूल ग्न इव सा ॥ ॥ मिथुन यवस्य य मक
लग्न इव सा मिश्रजनन यवस्य य कु रै नृ ल ग्न इव सा
रु न य दा त न व स्य य मीन लग्न इव सा वनि जालः
न मृ स्यं य द स्य य ॥ ३ ॥ ॥ गुरु य दा त न कुरुं ल ग्न

सा वल सा लि नं स्या कि स्या र्क धनं सा च या य था गन
ला रु दः ॥ ॥ गुरु य दा त न सा न कुरु ति न साः
लग्न वल व नृ इव सा गं य व मु नृ य या य य रु ल ग्न स
वन सा म नृ वः ॥ ७ ॥ अथ यथ य व क्रामि य रुं
लग्न या ग ना र म य स र्ग दि धा रु नां दृ ष (ग) म दी या दि
चः ॥ ॥ मं वल न स ग न सा ली व मु धा रु व मु गं य

स्ययं दृष्टव्यं स गनसा शा। भिस्तु गंदस्यय ॥ १
॥ मिथूनमानुषा विद्या कर्कटमकि कादय र हि रु ध
लोकथा वल कन्या ना नी स मू ह वा ॥ ॥ मिथूनल
ग्नस गनसा मनुष्य गंद स्यय कर्कटल ग्न रु न सा य
य मू कि गं ग्य स्यय सिहल ग्न रु न सा वल व मु गं ग्य
स्यय कन्या स ग्न रु न सा मिता जन गंद स्यय ॥ ६ ॥

कुलपिउत्तम आ गार्थं कृष्णया सा दि विष्णु क र काम
क रु चं गा दि नां द र्शा र्थ म क ल स्रु था ॥ ॥ वल ल ग्न
रु न सा म्वा क व मु गं द स्यय विह ल ग्न ग न सा क रं
न यू वा गं स्यय धनू ल ग्न रु ल सा सल गं द स्यय म क
ल ग्न रु न सा हा ष्ठ व मु स्रु व र्थ य ॥ ॥ ॥ कुल वि
रु ध नं य सा मी न उ ल रु ग रु व न् ॥ धु र ल ग्न रु रु ल ॥

य सोमा कवृष्टिक् षगमा वायुश्च सिमिषदाह्नीया
हानिस्थायाय सागमा ॥ वाकुललमरुवसा
धनमृतस्यय मीनलमरुलसा माहार्थांजादिनली
खथनवमु मृतस्यय ॥ लमरु ७ रुयद्वनसा
वृ कवृष्टिद्वनसा वमुचूय याययद्वनसा मंद
वमुमचूव ॥ इया ॥ ८ ॥ मिथो जमविनाय सोव

विवाचलामुसमाय ॥ ॥ ईनमानद्विक् षयाय ॥
यमिषां नवम्यां ३ वासुत्यानिनद्वयं ॥ सामावा
वसमा ३ कं नूयादिद्ववर्गवृत्त ॥ ॥ जवम्यां
ऊदाथाया सोवनामयका ६ थरु ॥ मयलासिदिजानिया
कोमानं गुरुचं वृत्त ॥ ॥ यादाक नवमिनिथिस
वसा रुनां वनवलसी ज्वनि रुवृणी रुद्विक् थरु

सुद्धता नक्रय वायितवत्ता सामवायया डाहावत्तु
यवस्यय मयलनया वायकमिऊननयवस्यय ना
मज्जा १५ धनसुद्धयव जक्रनहुया अनित्य पूर्वदा
यदस्यय १ वादिमियादधामि (ध्वव वादिन्यादि
नक्रयय मंगलवायसमायूकं नामवायविजानीकं
॥ वाकवग्नीयाउथाय गस्करीनामज्जानीकं ॥ वै

मीथनलनरुवकस्य वायमुकस्यवीरुक्त ॥ ॥
इयावदधमीमिथि वादिन्यादि ३ नक्रय जगववाय
या सिऊयमुवेव आस्यय ॥ कखगघदथनीनेमस्यय
॥ मिथनलनरुय वायकमिसानयवस्यय ॥ ज्जानदिग
यदस्यय ॥ २ ॥ रुमीयाकादधीमीथो यनवव्यादिन
क्रयय ॥ वदवालेसमायूकं साहानंदनवर्गवत्तम् ॥

तवर्ग्यां ऊदाथाय त्रीननामय काणयन् कर्कटलग्न
विजानीया ऊरुनागस्तु नरतन् ॥ ॥ रुनाय नका
दधी नीथी यूनवस्तु आदिन ३ नक्रय वृद्धवान् थनरुन
सा साहून नंदस्यय ॥ चरुजमज ॥ थननामस्यय ॥ क
कर्कटलग्नय ल्याचमामिजननवस्तुस्यय ॥ दक्षिणदि
॥ ३ ॥ चरुथ्यायां च दक्षिण मययादिन नक्रयय ॥

त्रयीवात्र समायुक्तं मांत्सार्यस्तु वृद्धनरु ॥ ॥
तवर्ग्यां ऊदाथाय त्रीननामय काणयन् कर्कटलग्न
विजानीया साधुनीगस्तु नीरुतन् ॥ ॥ चथाक द्वाद
नीमिथिमय आदिन ३ नक्रय आदिवात्रया चालेव
सुमस्तुस्यय ॥ ६ ॥ ७ ॥ थननामस्यय ॥ सिंदलग्नया
ल्यास्यमिमानवस्तुस्यय ॥ नैमस्यदिनय दक्षिणय ॥ ७

२००००० २२

२२२२२

२२२२२

२२२२२

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सिद्धनसा वाद्यद्वयमिजनन वृत्तमय ॥ दिगयद्विः
म ॥ १ ॥ ॥ यद्यस्यां वैर्यो वृत्तद्वय ॥ विष्णवादिन ३
नक्रुत्तयं ॥ हृदयस्य दिवात्र वै ॥ धन्यादिषास्योत्र
॥ ॥ ॥ यद्यस्यां नो जडाथाय ॥ योत्रनामयकाय
॥ विष्णुलासिरुवमस्य ॥ गस्तनीमधमामुत्र ॥ ॥
यद्यमि वृत्तद्वयमिथि ॥ विष्णवादिन ३ नक्रुत्त हृदय

निवात्र ॥ आजादिन ॥ णस्य वृत्तस्य ॥ यद्यवृत्तम
॥ धननामस्य ॥ विष्णुलास्य ॥ मधमामुत्र ॥ नक्रुत्तस्य ॥
सिद्धवायु ॥ ॥ ॥ सद्यमि यद्युमा ॥ तास्यां मूला
दिमालासंस्कृत ॥ धुकादितालसंस्कृतं ॥ कडावमोय
योत्रवर्ग ॥ ॥ यद्यस्यां नो जडाथाय ॥ योत्रनामयका
॥ यद्यमि ॥ विष्णुलासिरुमासंस्कृतं ॥ हृदयोत्रवृत्त ॥

॥ सफामि यूर्ध्वमासि निधि मूलादि ३ नक्षत्रं ध्रुवतात्र
ध्रुवकृत् नसा कत्रयुलि आदावमुष्वय ॥ यत्रलत्र
॥ धननामस्य ॥ धनलत्रया अथमिजननयूवस्य
यदिगडकृत् ॥ १ ॥ अथमिदधकिथिच ध्रुव
नादिनक्षत्रयं ॥ धीवीवात्रयसंरुक्तं कंसादिनामय
त्रयं ॥ ॥ धननामनां ऊदाथाय त्रिननामयकाध

यत् ॥ मिनलासिसमाजुक्तं हृदिकस्य वीमंरुवम् ॥
॥ अथमि अमावासी निधि ध्रुवनादि ३ नक्षत्रं धनि
ध्रुवतात्रया कंसवमु मिजलत्रयमुष्वय ॥ धनदे
से ॥ धननामस्य ॥ मिनलत्र किथीमिमानयूवस्य ॥
दिगळ् ॥ धन ॥ ८ ॥ यूर्ध्वमासि अमावास्या यत्ररुडा
दिनक्षत्रयं ॥ वीहीहोमथावर्त अथधुतुदत्रयम् ॥

नालांभयकेमीनके स्वयंरुचोत्रकथन। दृष्टोत्र
केदृष्टिके। लकारनाममंरुचक॥ ॥ पूर्वमात्रि
अमावासिनिधि पूर्वरुद्र उरुमेदु प्रवक्ति धनसह
मानकुरुयु॥ आदिमवाल सामवात्रया अरुधाड
यत्रशय॥ मयलन मीनलनया धनरुचानं यत्रश
य मयमअह॥ लयसहक॥ धनीनेमयय॥ मध्य

या॥ २ ॥ ॥ क्रिओत्रविषणमुत्तमाय॥ ॥
ऊयनिस्वानयानिस यवाकवृत्तनक यनहीकियव
॥ यमुवायक्रिसिस् विमानकृष॥ अमावासिस अरु
लीनकृष॥ १ ॥ वाक्कायानयक्रिसिस् विषाखन
कृष॥ अमावासिस आदिनीनकृष॥ २ ॥ मरुकाया
नयूक्रिसिस् अरुनकृष॥ अमावासिस यनवृत्तन

क्रुश ३ ॥ दिग्नायूद्रिसिस् उरुवाटनक्रुश ॥ अ
मावासिस् ययनक्रुश ॥ ३ ॥ सुविज्ञानयूद्रिसिस्
पुननक्रुश ॥ अमावासीस् पूर्वरात्रुनक्रुश ॥ १ ॥
ॐ द्यायूद्रिसिस् उरुवडनक्रुश ॥ अमासिस् रुमन
क्रुश ॥ ८ ॥ कटिनायूद्रिसिस् अश्विननक्रुश ॥
अमावासिस् स्वातिनक्रुश ॥ ९ ॥ कायनायूद्रिसिस्

कृत्तिक
रुमनीनक्रुश ॥ अमावासिस् अनवाटनक्रुश ॥ ८ ॥
थिस्नायूद्रिसिस् मगधीननक्रुश ॥ अमावासिस् पू
र्वरुडनक्रुश ॥ ९ ॥ आसनायूद्रिसिस् यनर्वधुन
क्रुश ॥ अमावासिस् धवनक्रुश ॥ १० ॥ मनायूद्रि
सिस् मयनक्रुश ॥ अमावासिस् धरणीयनक्रुश ॥ १
१ ॥ चमनायूद्रिसिस् उरुवाटनक्रुश ॥ अमावासि
यवेरात्रुन

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सां ॥ रुभां लाकया अनगडह्या कश्च सां ॥ रुभां लाकया
 सां ॥ आग्नेय वायु दक्षिण ॥ गरुड कश्च सां ॥ आ
 एतदातक निव ॥ मरिचिगुरु ल दक्षिण कश्च सां ॥ म
 स्या दक्ष मध्य लाक समस्त पीरु दक्षिण यिष्ठ ल
 यिष्ठ मां ॥ दक्ष ॥ अग्नि दक्षिण कश्च नगदक्षिण
 ग्रामदक्षिण मीरु दक्षिण ॥ राजा ॥ विष्णु दक्षिण यः

जायादृष्टवश्यं यादाश्चकार्त्तसिमरुं चित्रं यथीविम
धमनरुक् यथावचानिदं लंखदकं सचित्रं स्थानसक
नं चयवनिरुह्यं भायित्वं स्यामावसा । समस्तं मरिनि
व मिखास्याकं भागदयित्वं रुमीददधस्यं कायित्वं
व वलिखानं वामगायित्वं रुमिसहस्रमरिनिदं
दक्षिणरुह्यं देयं देसकारयदयं ॥ धनं आनमधुलया

कुरुल ॥ ॥ रुक् चित्रं स्थानि मृगणीव यनर्व
रं पूर्वहास्यं मृगणीव ॥ ॥ धनं नक्रुहस रुयाः
वायसां देमवशुक्तसां रुयुक्तसां रुनांचदुगुरुनरुयसां
सूर्यग्रहनरुयसां रुनां भवता नानाउयां मरुयसां
वायुयामधुल ग्रहनरुयसां वायुयदानरुनिदं ॥ ॥
मरिह दक्षिणरुयुव जातदकार्त्तं ददस्युं रुं याः

कारं नात्र नञ् आदिन समस्तं रगञ्चिन्न सिसावः
सा समस्तं मरिचिन्न समस्तं लाकर्यां यत्ता कनायः
धुल्लयिन्न बाजासविन्न धञ्चिन्न सिकदयः ॥ सत्रः
किसिया चत्राञ्च आदिन खानचायनदायिन्न सः
मस्तं लाकर्यां दासयीजादयः ॥ धनं वीने समस्तं भायि
ववावायूयमधुलया धनं करुल ॥ ॐ ॥ ॥

धन्यदुःखिनि अनन्तर धनं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
अत्रिचि ॥ धनं नक्रयस रूपातात्रसां मत्रञ्चनसां रुं
कुनसां सत्रयदनञ्चनसां सत्रयदनञ्चनसां भर्ग
वेडयानञ्चनसां धनं सत्रुल सिद्ध मादुनमधुल
सत्रिकञ्चनसां नागनासञ्चनसां वादुनमधुल
रूपाय चत्रञ्चनसां धनं सत्रुल मादुनमधुल

अक्रयविद्यासयिद्व सुखेदया धर्मसययइ यिद्व॥
द्यायइयसनां ससावसाइयसना रुसक आदिनस
मरुं रिनिद्व॥ यु वा शुका युका आदिन सम
रुं रिणीद्व॥ कव मरुम ग्वयमूनिद्व समरुं लाक
या मनरुममानइयीद्व बाजास विजयइयिद्व रु
मीरु णस्यतादययिद्व सुखिणइयिद्व बागनासइ

यु धर्ममाहुदमधुनयारुल॥ ॐ ॥ आदाय
॥ धर्ममय णरुसिष यवकि डलायाद डगुरुद ध
मनकव रुषावालीसीमयकइगसां रुकुतसां रुनां
यवुयहनइयसां सूर्ययहनइयसां भवमाडया
रुनइयसां रिद्व वाचुलिमधुल रुषावायसां यद्वि
मव युर्वव चयिद्व गरुनइयसां यद्विमनद्वनि

वसुधैव कुटुम्बकम् सा भूयसा ददुह्याय अदिक दयित्व
 सती न स दुमि सा ना स काय वयित्व नख सा वा द
 ययित्व रुमि स गच्छ वा द ययित्व बाग कृतां मे दयू
 समस्तं लोकं धानि रुयित्व यामसं न गलतं वाक्त्र
 धनमासा स दृष्टिमान रुयित्व वाञ्छया जय रुयं ध
 रुजय त्वय रुयित्व धनं वा न धि मधुल या सूरुल

॥ ५८ ॥ **अथ नमः प्रविशुदया** या लिहासनयस्य
 कया रुना ॥ ५९ ॥ ७ ॥ **एतानां रुच रुनां मय**
 नेन धनन कृणु कृणु रुन सायाया कुरुल चतुय
 रुन सूर्य ग्रहनं सायाया व्याधिन कयित्व यदध
 वन मृत् रुय रुत धन रुनि रुय मरु रुय दयू ॥
 थया धानि दान विष रुमयाय दत्त यज्ञायाय ज्ञा

यथायथाथनयाकसाथयाधामिकिरुयु ॥ ॐ ॥
ॐ निमयविग्रयिन्मया समाय ॥
ॐ नमोऽपीत्योयवथलित्वाधायमयन ॥ यय
सूर्यज्ज्वावदु सुवकन्दगुनामव ॥ नकवयनयाजा
ना विदुर्नल श्रीजामक ॥ ॥ ययममआदिन
यानसर्ता वदुचानसर्ता कन्दमनौ दहस्यजिवा

नसा धर्ममनसा दं १ दववम लश्रीवादलथिव
॥ १ ॥ लमनकनयुवयुव मेकदधकूलक
ध १ वरुधवयथागन वलन्यामनमधय ॥ ० ॥
लमम दहमयि शुक्रयानसा वकादधम क
नयदुवा मसा यिददववम मानालामयदे ॥
२ ॥ लामाकदधम (सव) किमियवदममथा

॥ सयकवर्षमवकस्य रुमिलारुंनसंय ॥
जंगलप्रादिर्य दक्षमवानसा दिनियस वर्द्धव
वर्द्धनायवानसा क्रसंदस रुमिलारुदयिव सं
क्षयममाल ॥ ३ ॥ मकादक्षानीवाह युववैव
कुसकर्म दक्षमध्वजदावर्ष वसुलारुंधनजयं ॥
॥ एकादक्षम धानिध्वन गाहवनसा रुभांसय

मस रुदस्यवनसा ध्वकं जिदद्वनस वसुलारुध
नलारु जसलारुदयिव ॥ ७ ॥ रुमियध्वजदा
स्य कर्मसुन रुदस्यमि ॥ अथादक्षमववर्ष सुल
रुंविहवागमं ॥ ॥ रुमियस आदिर्य दक्ष
मस रुदस्यमिवनसा दं १३ सुलारुधनलारुदय
॥ १ ॥ युवलाप्ररुयुसक रुमिय धानिवाहव

॥ या उवाच ॥ धर्मवत्तमं वाक्यं ज्ञानविषयम् ॥
लभ्यते हृदयमिह सकलं सुखं कृत्यम् ॥ धर्मात्
न जायते धर्मवान्मा वयं ॥ वाक्यं सादृशं नित्यम् ॥
८ ॥ मनसु न कदा वदं चतुर्विंशतिं नित्यं
धर्मवत्तमं वा ॥ यत्तु लोके न संशयः ॥ ॥ उवाच ॥
न स वदं चतुर्थं स वदं सुखं नान्यथा न सा व

यं २० यत्तु लोके नित्यं ॥ १ ॥ लभ्यते न कदा
सुखं सकलं सुखं नित्यम् ॥ चतुर्विंशतिं नित्यं कथा
यत्तु लोके न ॥ ॥ उवाच ॥ सुखं सकलं हृद
यमिह चतुर्विंशतिं नित्यं २९ कथा लोके नित्यं
यत्तु लोके नित्यं ॥ ८ ॥ दधाम धर्मं कदा जीव सकलं
धर्मात्तमं वा ॥ अथ विंशतिं नित्यं सुखं लोके न

७५॥ ॥ दक्षमस हृदयमिदमसा सयमसव
द्वेन चतुर्वनायवानसा वर्ष २८ हृदयमिदमसा ॥
८॥ यष्ट्याद्विद्वानिद्विक रूतियकयमवच कच
ल्लनजादाजिव कीदादेवयधनजय ॥ ॥ यष्टम
स जाद्विद्वानिद्विक रूतियस कचयानसा कच
स हृदयमिदमसा वर्ष ३० धनलारु ऊरुलारु ॥ द

यिव ॥ १० ॥ रूतिययुवविशाम शुभ्रतलमनह
यत ॥ चतुर्विद्वानिद्विक रूतियस कचयानसा कच
रूतियस आदिव अंगवचनसा हृदयन लमनस्ये
सेनसा वर्ष ३३ मीलीरु धनलारु दयिव ॥ ११ ॥
रूतियकचरुमीध्व धनल्लन हृदयमिद्विद्वानिद्विक
यवय धनलारु सखरुव ॥ ॥ रूतियस्य शुभ्रतल

उचानसा द्विमियम हृदयमिवनसा वय ३८ मरु
नाम ॥ १२ ॥ लम्नम वन्दु चतुर्थमन्त्री स
यवधदहाममचुका ॥ चाली धवय धनलासा लीला
रुकाकुना धन ॥ ॥ लम्नम वन्दु चानसा चतु
र्थम हृदयमिवनसा सयमम वृद्ध दहाममचु
कवनसा वय ४० धनलासा लीलासा रुकाकुना धन

शिव ॥ १३ ॥ मकाद (१) उदा नाम वयममधववी
वृद्ध ॥ चाली धवय रुववय यूललासा रुकाकुना धन ॥
॥ अंगमच नुकादहवनसा वयममम आदिस्य
वयवनसा वय ३३ यूललासा रुकाकुना धन ॥ १४ ॥
धर्मस्य नगुपुलामं वृद्धलन हृदयमिव ॥ अथ सः
रुववय रुवमिमृदु चलासा रुकाकुना धन ॥ ॥ नवममः

सुकुं जंगमवनसा कन्दस हृदयमिवनसा वर्ष
४८ गृहलारु रुमिलारुदयीव ॥ १२ ॥ लम्पनस
नवयुधुज रुमियसामेद दया ॥ यंकेमभवयथागः
न वाजयुजायदुधन ॥ ॥ लम्पनस हृदयमिधु
कुवनसा रुमियस जंगम हानीधवनसा वयं
० वाजमायदयु वदुधनलारु ॥ १४ ॥ यकेमभव

सुचन्द दक्षमनविवयथा ॥ यंकेमयंकेमसवयनय
कुपीकुसखंरवम् ॥ ॥ यकेमस सुकवन्द
ननायुनानसा दक्षमस आदिसनोयवधवनायवन
सा वयंकेमयुनयुलारुदय सुखसेयकिदयः
॥ १० ॥ ॥ निदाकमनीराधिम लिष्टाधाययथ
मानसाय ॥ ॥ लम्पनयुजीववदुधनमय दक्ष

भवतु सुखं जयसुखं (स्त्रीमर्थयुग्मधनलासुखं) भ
 कायुषवेमहावर्षदत्तं ॥ ॥ लम्पस हृदयमिदं
 नसा सुकमसवद्वनसा दक्षमस युक्तवनसा यय
 मस जंगलवनसा वर्षा स्त्रीलारु धनलास युक्ता
 रुदयिव ॥ १८ ॥ लम्पसवधमामस्य सरुजस्य
 हृदयमिदं कर्मस्तु नदाताम दिव्यवेमहालश्रीरुः

वरु ॥ ॥ लम्पस वध वद्वनसा हृदयमिदं
 हृदयमिदं नसा दक्षमस जंगलवनसा वर्षा स्त्री
 दिव्यवनदयीव ॥ १९ ॥ वयस्य युक्ता नीलस्य आय
 स्य हृदयमिदं हृदयवेमहाल वद्वनसा गम्यका केन
 रुदयिव ॥ ॥ वयस्य युक्ता नीलस्य आय
 स्यवनसा जकादक्षस्य वद्व हृदयमिदं नसा वर्षा

















